IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

प्रकृति और व्यक्ति: कालिदास के काव्य में राष्ट्रीय भावनाएं

तर्पदा मिश्रा[1] and डॉ. सुषमा रानी[2]
[1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग
[2]सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रस्तावना

महाकवि कालिदास ऐसे युग के आरम्भ में आविर्भूत हुए थे जब भारत उपनिषदों से पुराणों की ओर, वेदान्त और सांख्य की ऊँची चोटियों से उतरकर संन्यासमूलक योग की शारीरिक प्रक्रियाओं की ओर अभिगमन कर रहा था। भारत के महान संस्कृति, परम्पराओं से चमत्कृत कालिदास ने भारत की भौतिक मनःस्थिति के व्याख्याता बनकर स्वरचित साहित्य में राष्ट्रियता का पोषण किया । महाकाव्य हो या खण्डकाव्य या नाटक, कालिदास की राष्ट्रिय चेतना सर्वत्र प्रचुर रूप से परिलक्षित हुई है। राष्ट्र की सीमाओं में कवि को अपनी जन्मभूमि से विशेष प्रेम होता है। जीवनवृत्त की दुर्लभता की स्थिति में यह अभिनिवेश कविरचित साहित्य के अनुशीलन से सरलतया प्रकाश्य हो जाता है, किन्तु कालिदास के विषय में यह सिद्धान्त खरा नहीं उतरता है । कारण भारत के प्रत्येक भूभाग का वर्णन उन्होंने इतनी तन्मयता और मनोयोग के साथ किया है कि वे बंगाल में जन्म थे या उज्जयिनी में या हिमालय में सन्दिग्ध ही रह जाता है। भारतीयता के प्रति जो आत्मीयता और कृतज्ञता कालिदास के साहित्य में दृष्टिगत होती है वह उन्हें राष्ट्रिय कवि सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है।

सन्दर्भ-सूची

[1]. पूर्वमेघ - 13
[2]. कुमारसंभव- 1/1
[3]. कुमारसंभवम्- 1/1
[4]. कुमारसंभवम- 1/3
[5]. ऋग्वेद-1/164/4
[6]. श्रीदुर्गासप्तशती - 10/5
[7]. रघुवंश-1/2

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

[8]. रघुवश-1/5

[9]. रघुवश-1/6

[10]. रघुवश-1/7

[11]. रघुवश-1/8

[12]. रघुवश- 1/9

[13]. अभिज्ञानशकुन्तल-7 / 14

[14]. अभिज्ञानशकुन्तल-7/33

[15]. वायुपुराण - 99/113

[16]. अभिज्ञानशकुन्तल- 1/1

[17]. कुमारसम्भव- 17/55

[18]. अन्वेषय

[19]. अभिज्ञानशाकुन्तल- 1/13 के पश्चात्

[20]. अभिज्ञानशकुन्तल-7/35

[21]. विक्रमोर्वशिया-5/25

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in